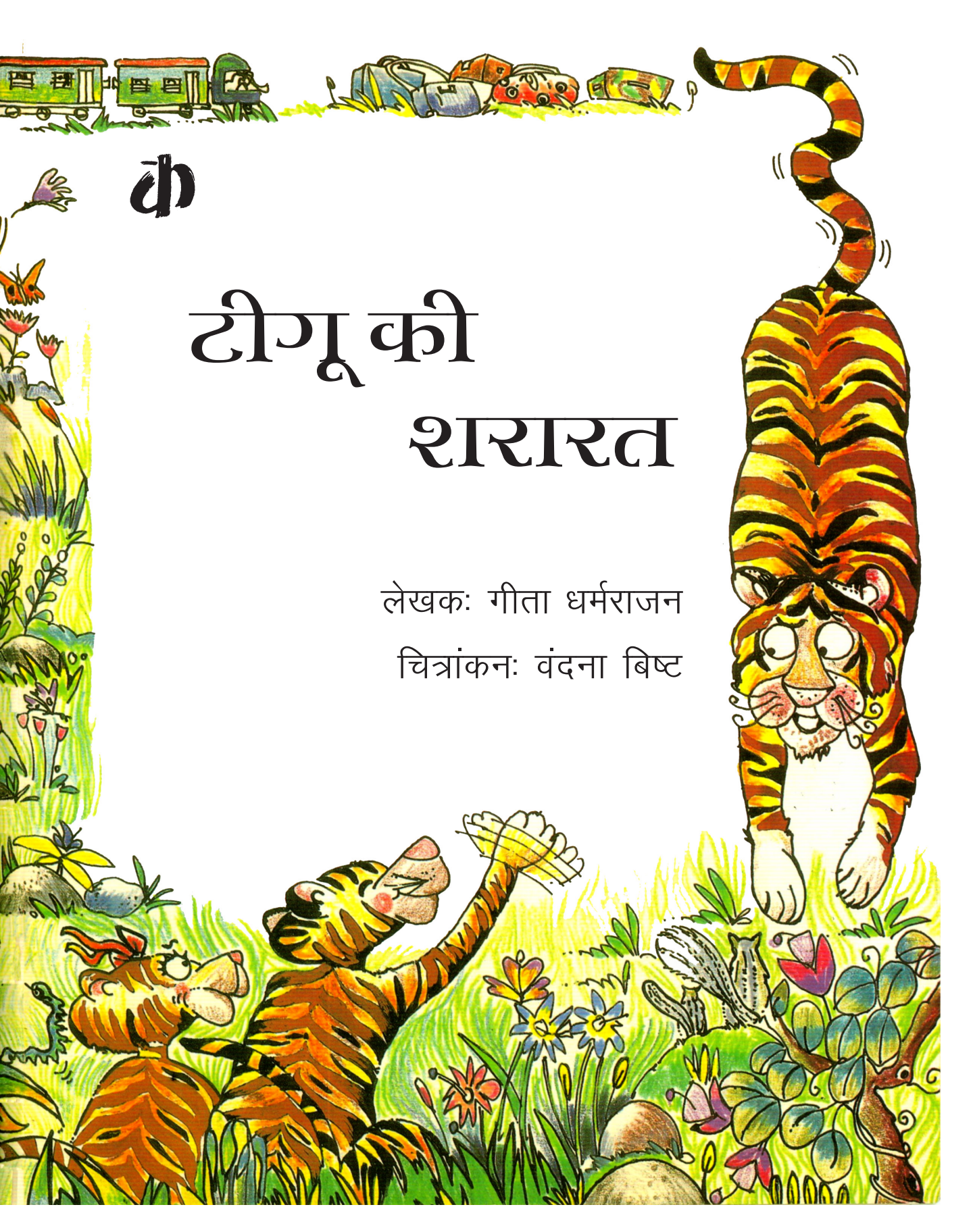

टीगू की शरारत

लेखक: गीता धर्मराजन
चित्रांकन: वंदना बिष्ट

यह किताब

....

की है।

dFkk d fo"k; e

कथा एक लाभ निरपेक्ष संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में हुई। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में कथा का अनूठा योगदान है। कथा झुग्गी-झोपड़ी, बस्तियों और सरकारी स्कूलों में काम करती है ताकि हर बच्चा मज़े के लिए और अच्छी तरह पढ़ सके। महिलाओं और अध्यापिकाओं के द्वारा कथा बच्चों में उनकी प्रतिभा को उजागर करने में मदद करती है।

हमारी किताबें, वर्कशॉप और शिक्षण केन्द्र, कहानी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ती हैं। कथा का अनुवाद के क्षेत्र में किया हुआ काम भारतीय प्रकाषन के इतिहास में अनूठा माना जाता है। इसे *इकोनोमिक टाइम्स* ने इन शब्दों में सराहा है, "A unique and special moment in Indian publishing history ..."

कथा की पुस्तकों को विश्व स्तर पर ख्याति मिली है। अंतर्राष्ट्रीय ज्युरी द्वारा प्रतिष्ठित एस्ट्रिड लिंडग्रिन पुरस्कार के लिए भी कथा का नामाँकन किया गया है। बाल साहित्य के क्षेत्र में यह पुरस्कार विश्व में सबसे बड़ा माना जाता है।

कथा नवीन एवं अनुभवी लेखकों, अनुवादकों और चित्रकारों के साथ काम करती है।

क्या आपको बच्चों के लिए लिखना, चित्र बनाना, अनुवाद करना अच्छा लगता है? तो अपनी प्रतिलिपि इस ईमेल आई डी पर भेजें: editors@katha.org, और बनें कथा परिवार का हिस्सा।

"[Katha] ... an educational jewel in India's crown."
— **Naoyuki Shinohara, Deputy Managing Director, International Monetary Fund**

"Katha stands as an exemplar for all the creative projects around the world that grapple with ordinary and dramatic misery in cities." — **Charles Landry, The Art of City Making**

"Katha has a real soft corner for kids. Which is why it … create[s] such gorgeous picture books for children."
— **Time Out**

"Katha's work is driven by the idea that children can bring change to their communities that is sustainable and real, just as the children do in [their books]." — **Papertigers**

टीगू की शरारत

अलेखक: गीता धर्मराजन

चित्रांकन: वंदना बिष्ट

KATHA

''जल्दी तैयार हो जाओ टीगू'' उसकी माँ ने कहा! ''आज तुम्हारे शेरू मामा आ रहे हैं!''

''बाघपुर वाले शेरू मामा?'' टीगू, बाघ के बच्चे ने आह भरी ''क्या तुम नहीं जानती, वो मुझे कितना चिढ़ाते हैं?'' गुस्सा होते हुए उसने माँ से पूछा। ''और वे हमेशा मुझ पर हँसते हैं, मुझे उनसे नहीं मिलना है।''

''क्या टीगू!'' माँ ने मुस्कुराते हुए कहा। ''और मुझे सब दोस्तों के सामने छोटी बच्ची कहते रहते हैं। टीगू बोली।''

''तब तुम छोटी थीं,'' माँ ने कहा। ''फिर भी वो आ रहे हैं, हमें उन्हे खुश रखना है।''

''मैं स्टेशन नहीं जाऊँगी।'' टीगू, तुम्हें उन्हें घर लाना है। मुझे भोजन का भी प्रबंध करना हैं। पहले दिन ही मामा को शिकार करना पड़े ये ठीक नहीं।

तो बड़बड़ाती हुई टीगू माँ के साथ चल दी।

पांच बजे थे। रेलगाड़ी को आने में देर थी। बादलों पर लालिमा छा रही थी और गुलमोहर के फूल सा लाल सूरज धीरे-धीरे उपर चढ़ रहा था। टीगू ने सोचा *शायद रेल आएगी नहीं।*

लेकिन गाड़ी आ गई, छुक-छुक करती। जैसे बहुत थक गई हो। इतने सारे जानवर व पक्षी मानो एक दूसरे पर लदे थे। शेरू भीड़ में रास्ता बनाते, धकेलते हुए आ कर ज़ोर से 'बोले' ''कैसी हो दीदी? अरे, छोटी टीगू!''

टीगू के तनबदन में आग लग गई। ''मैं अब बच्ची नही हूँ'' वह जोर से बोली। वो जानती थी की सब जानवर उस पर हँस रहे हें। ''ठहरो शेरू 'मामा' मैं ऐसा मज़ा चखाऊँगी कि मुझे सदा के लिए बच्ची कहना छोड़ दोगे,'' उसने मन ही मन सोचा।

''देखो मैं सबके लिए कुछ लाया हूँ और अपनी छोटी के लिए, एक छोटा सा उपहार,'' शेरू मामा ने कहा।

ग ... र् ... र् टीगू दाँत दिखाते हुऐ गुर्राई।, शेरू मामा हँस पड़े।

''टीगू तुम्हें घर ले जायेगी,'' माँ ने कहा, ''मुझे कुछ काम है शेरू।''

''क्या हम हाथी टैक्सी ले लें?'' शेरू ने पूछा।

''टैक्सी?'' माँ हँसी, ''अरे ये तो रहा घर, टीगू को रास्ता पता है।''

''पता है, कमाल है?'' शेरू मामा शरारत पर उतर आए।

उसी समय टीगू के दिमाग मे एक तरकीब आ गई ! माँ उस समय मामा से बात कर रही थी, इसलिए टीगू के चेहरे पर फैली शैतानी से भरी हँसी नहीं देख पाई।

''मै मदद करूँ, शेरू मामा?'' टीगू ने आदर से पूछा।

''तुम्हारे लिये यह सामान भारी है,'' शेरू ने कहा।

''जैसी आपकी इच्छा,'' टीगू मुस्कुराते हुए बोली। यही तो वो चाहती थी ! ''हाँ, माँ कहती है आप बहुत तगड़े हैं!''

वह चलते रहे, चलते रहे, चलते रहे! ''क्या यह वही पेड़ नहीं जो हमने थोड़ी देर पहले देखा था?'' शेरू की आवाज़ में संदेह था।

मामा तो पहली बार आए हैं उन्हें घर तो मालूम ही नहीं, कहाँ है। अभी वे घर के करीब से निकले थे! फिर ऐसे ही दो चक्कर और टीगू ने लगवा डाले। वह भी थक गई थी।

''अह, उफ ... क्या पहुँच गये?'' मामा ने पूछा।

''माँ गुस्सा करती, पर आपको टैक्सी ले लेनी चाहिये थी,'' टीगू बोली।

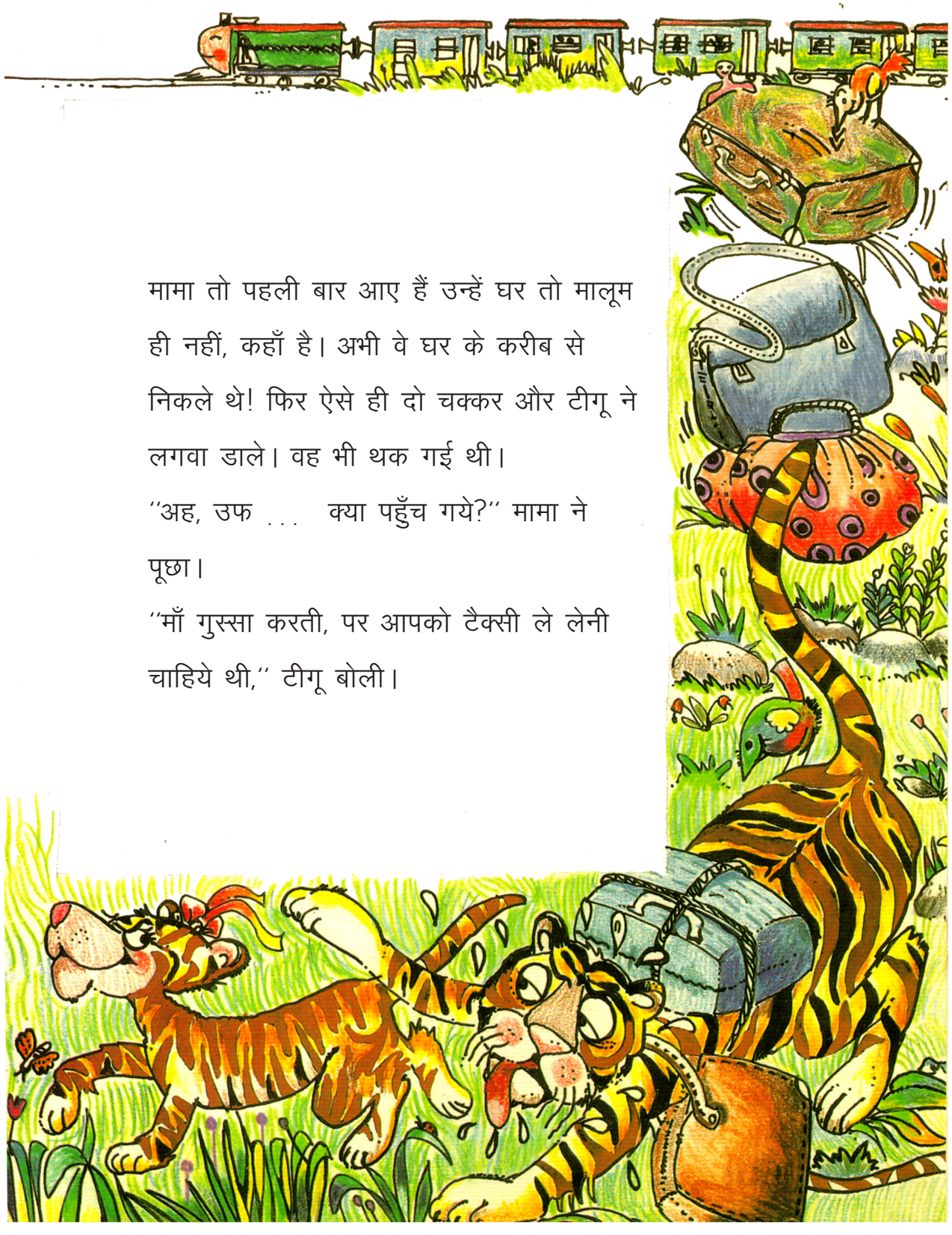

''अरे ... अह ... नहीं,'' शेरू मामा सामान से उलझे हुए बोले। फिर चकरा कर सामान ठीक जामुन गली के बीच में पटक दिया। वे तीसरी बार यहाँ से गुज़र रहे थे। ''अब बस ... मैं और नहीं चल सकता।'' वे हाँफते हुए बोले।

''मामा, मुझे माँ को बताना पड़ेगा कि आप कितने कमज़ोर हो गए हैं।''

शेरू के चेहरे का रंग उड़ गया। ''अरे नही नही वो मजाक उड़ायेगी।''

''आप कहते हैं तो नहीं बताऊँगी। पर आप भी मुझे कभी छोटी नहीं कहेंगे।''

''अब तो मैं तम्हें बच्ची कह ही नहीं सकता, ठीक?''

''हाँ ठीक!'', टीगू अपना सर हिलाते हुए बोली।

''मै याद रखूँगा।'' शेरू हँसते हुए अपना पंजा बढ़ाकर बोले, ''दोस्त?''

''हाँ दोस्त,'' टीगू भी हँस पड़ी। घर पहूँचे तो माँ राह देख रही थी।

''क्या हुआ, टीगू? और शेरू तुम इतने थके हुये क्यों लग रहे हो?''

टीगू बोली, ''माँ, मामा हमारा गाँव देखना चाहते थे तो ...''

''इतनी लम्बी यात्रा के बाद?'' माँ को हैरानी हुई।

''छोड़ो दीदी, पर टीगू अब काफी बड़ी हो गई है।'' शेरू ने टीगू की तरफ शरारत से आँख मारते हुए कहा, ''क्यों, है न टीगू!''

xhrk /kejkt u बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और *पेन्सिलवेनिया* विश्वविद्यालय की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

बच्चों की किताबों की जानी–मानी लेखिका एवं चित्रकार, onuk fc"V को दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट से डिग्री प्राप्त है और इनकी विशेषज्ञता इलस्ट्रेशन में है। इन्होंने बच्चों के लिए कई किताबों का चित्रांकन किया है और इन्हें नोमा कान्कूर्स और कथा अवॉर्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है।

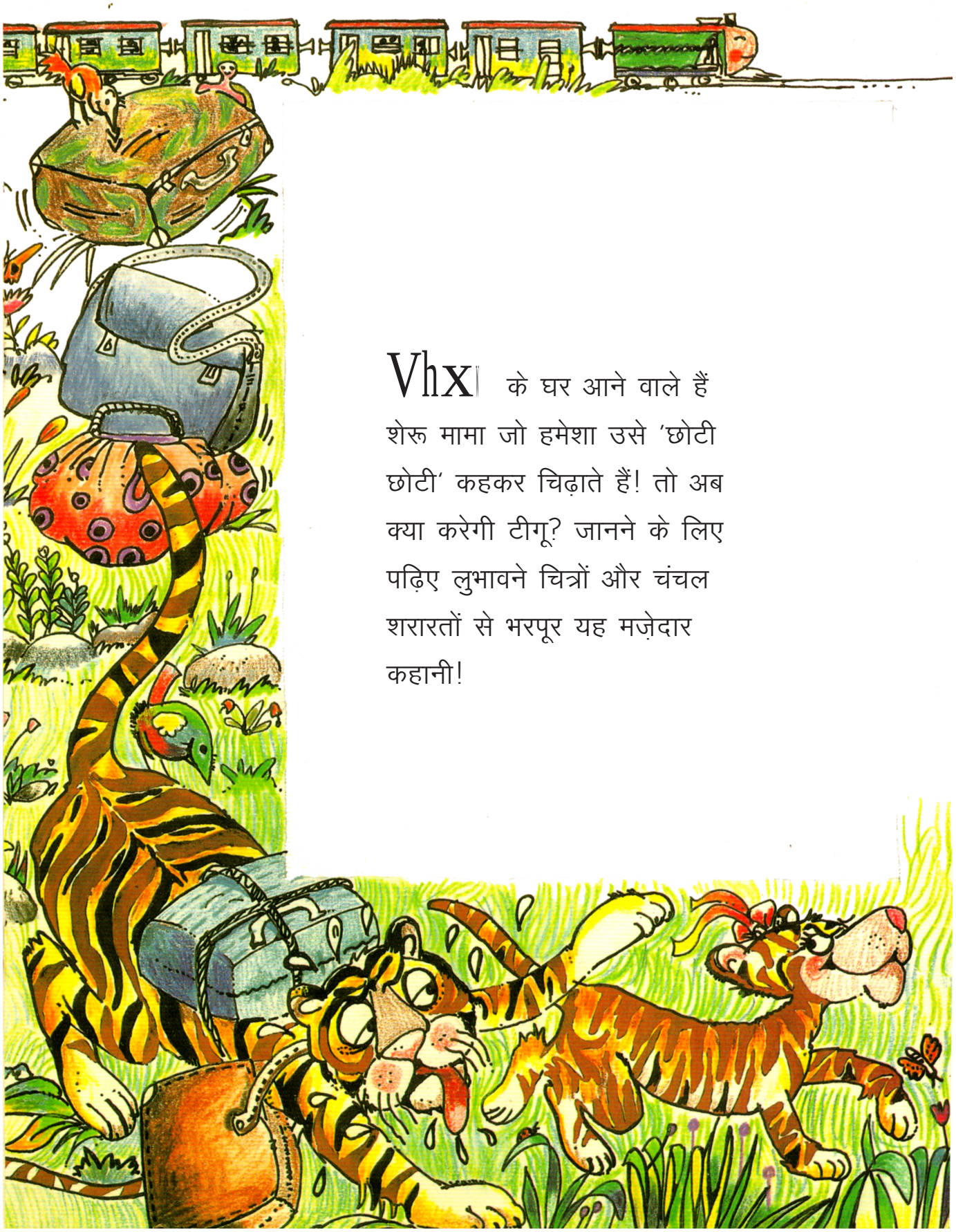

Vhx के घर आने वाले हैं शेरू मामा जो हमेशा उसे 'छोटी छोटी' कहकर चिढ़ाते हैं! तो अब क्या करेगी टीगू? जानने के लिए पढ़िए लुभावने चित्रों और चंचल शरारतों से भरपूर यह मज़ेदार कहानी!